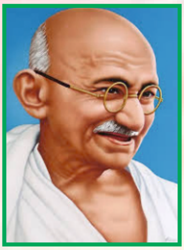

जीवनपथ हिन्दी

₹ 10/-

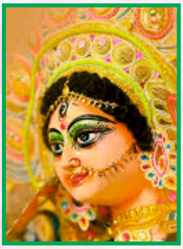

JEEVANPATH HINDI

1

Vol. No. 14, Issue No. 2 (₹ १०/– प्रचार के लिए) Mumbai, 15th September 2025

Website : www.jeevanjyot.in Total 36 Pages E-mail : jeevan_jyot@yahoo.in

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।

श्री जलाराम अन्नदान क्षेत्र... जय श्री जलाराम बापा'
समाज के लोकहित की भावना में पूर्ण रूप से गैरव्यावसायिक
मुखपत्र **जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट** की भेंट

तस्वीर बोल रही हैं मातुश्री कांताबेन चुनीलाल गगलदास शाह (सेरीसा-खेतवाडी) प्रेरित जीवदया की

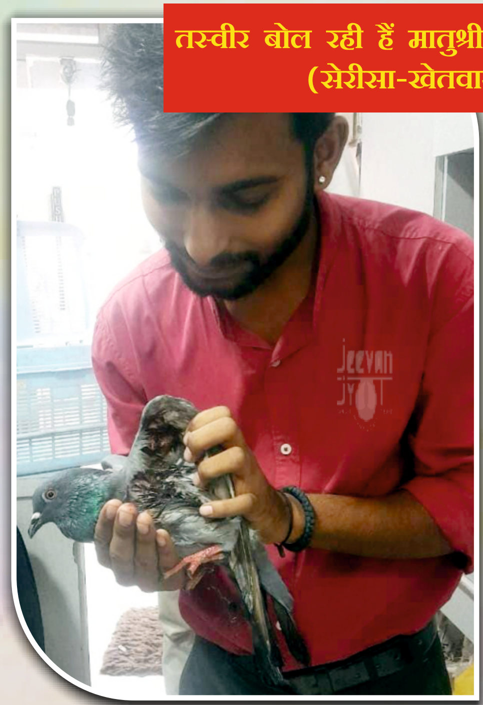

चूहे के काटने से
घायल हुए कबूतर को
तत्काल उपचार के
लिए जीवन ज्योत
जीवदया विंग में
लाया गया।

गरीब, निराधार कर्करोगग्रस्त मरीजों को अन्नक्षेत्र में, जीवदया में और टॉयबैंक में अनुदान देने वाले और इस अंक के सौजन्यदाता

प्रिति प्रफुल छेडा (अंधेरी)

तस्वीर बोल रही हैं 'साईशा-नाईशा दाणी टॉयबैंक' की

'साईशा–नाईशा दाणी टॉयबैंक' अंतर्गत जीवन ज्योत संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बाल कैंसरग्रस्त मरीज़े जादु का शो देखकर, तरह तरह के गेम खेलकर, स्वादिष्ट भोजन का लुफ्त उठाकर, नए नए उपहार प्राप्त कर आनंदित हुए ।
तस्वीर में एक विकलांग कैंसरग्रस्त लड़की व्हीलचेयर पर बैठकर आनंद लेती हुई दिखाई दे रही है।

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट

विशेष सूचना : यह पुस्तिका आपको सप्रेम भेंट के रूप में भेजी है । इस पुस्तिका को आप अपने मित्र-परिवार को पढ़ने के लिए दीजिए, ताकि उनसे कॅन्सर पीड़ित रोगियों को आपके अनुदान व सहयोग का कवच मिल सके । आपकी इस सेवा के लिए हम आपके चिरकाल तक ऋणी रहेंगे ।

स्थापना : १९८३

जीवनपथ

पथदर्शक : श्री खेतशी मालशी सावला

मार्गदर्शक : श्री बुद्धिचंद मारू

मुद्रक/स्थापक/प्रकाशक : हरखचंद सावला

संपादक : चन्द्रा शरद दवे

सह संपादक : आशा दसोंदी

-: शाखा कार्यालय :-

कोलकता कार्यालय

विनेश शेठ (गोपाल), ५, तल मजला,
खीरु प्लेस, कोलकता- ७०० ०७२. टे.: २२१७७८३४

जलगांव कार्यालय

शाह राघवजी लालजी सतरा (गुंदाला)
१०९, पोलनपेथ, जलगांव- ४२५००१
दूरध्वनि:०२५७-२२२४१५६ मो: ०९६७३३६४२९०

सांगली - कोल्हापुर

मीना जेठालाल मारू (हालापर)
मो. ७७०९९००४३३

नालासोपारा कार्यालय

१२, लक्ष्मी शोपिंग सेन्टर, राधा-कृष्णा होटेल
के बाजु में, तुलींज रोड,
नालासोपारा (ईस्ट)
खूश्बु गाला - मो. ८९२८७६५३०१

(कायदाकीय अधिकार क्षेत्र मुंबई रहेगा)

-: मुख्य कार्यालय :-

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट

५/६ कोंडाजी चाल, जेरबाई वाडिया रोड,
टाटा हॉस्पिटल के पास, पेट्रोल पंप के सामने, परेल,
मुंबई-१२. मो.: ९८६९२०६४००/९०७६१६९३५५

इस पुष्प की पंखुडियाँ

सम्पादक की लेखनी से.................... ४
भजन - बाबा तेरे द्वार पे.................... ७
व्यक्ति विशेष -एडविन हरबर्ट लैंड ९
माँ की ममता ११
पथ के दावेदार १२
पानी रे पानी १७
काव्य १८
एक दशक की देरी और एक डॉलर की कमी . १९
अर्जुन का प्रभु प्रेम २२
मूरखराज २३
चैतन्य चिकित्सा २७
'सम्मोहक शक्ति' का रहस्य ३०
सावधान.................................... ३२
हास्य का हसगुल्ला ३४

अंक में दिए गए उपचार और सलाह का उपयोग अनुभवी की सलाह लेकर ही करें ।

अब वेबसाइट पर "जीवनपथ" पढ़ सकते हैं

www.jeevanjyot.in

ट्रस्ट रजि. नं. P.T.R.E.-17259 (M) - F.C.R.A. 083780700

❂ TI.T. EXEMPTION, DIT (E), MC/8E/80G/53(2009-11)

❂ CSR Registration No. CSR 00002659 ❂ **Email :** jeevan_jyot@yahoo.in

ॐ अरिहंते नमो नमः
संसार के प्रत्येक जीव का हर क्षण मंगलमय हो।

संपादक की लघु लेखनी से...

प्रिय मान्यवर पाठको,

बुद्ध ने सिखाई आत्मनियंत्रण की कला

एक लड़का अत्यंत जिज्ञासु था। जहां भी उसे कोई नई चीज सीखने को मिलती, वह उसे सीखने के लिए तत्पर हो जाता। उसने एक तीर बनाने वाले से तीर बनाना सीखा, नाव बनाने वाले से नाव बनाना सीखा, मकान बनाने वाले से मकान बनाना सीखा, बांसुरी वाले से बांसुरी बनाना सीखा। इस प्रकार वह अनेक कलाओं में प्रवीण हो गया। लेकिन उसमें थोड़ा अहंकार आ गया। वह अपने परिजनों व मित्रों से कहता- 'इस पूरी दुनिया में मुझ जैसा प्रतिभा का धनी कोई नहीं होगा।'

एक बार शहर में गौतम बुद्ध का आगमन हुआ। उन्होंने जब उस लड़के की कला और अहंकार दोनों के विषय में सुना, तो मन में सोचा कि इस लड़के को एक ऐसी कला सिखानी चाहिए, जो अब तक की सीखी कलाओं से बड़ी हो। वे भिक्षा का पात्र लेकर उसके पास गए।

लड़के ने पूछा- 'आप कौन हैं?'

बुद्ध बोले - 'मैं अपने शरीर को नियंत्रण में रखने वाला एक आदमी हूं।' लड़के ने उन्हें अपनी बात स्पष्ट करने के लिए कहा। तब उन्होंने कहा- 'जो तीर चलाना जानता है, वह तीर चलाता है। जो नाव चलाना जानता है, वह नाव चलाता है, जो मकान बनाना जानता है, वह मकान बनाता है, मगर जो ज्ञानी है, वह स्वयं पर शासन करता है।'

लड़के ने पूछा - 'वह कैसे?'

बुद्ध ने उत्तर दिया- 'यदि कोई उसकी प्रशंसा करता है, तो वह अभिमान से फूलकर खुश नहीं हो जाता और यदि कोई उसकी निंदा करता है, तो भी वह शांत बना रहता है और ऐसा व्यक्ति ही सदैव आनंद में रहता है।' लड़का जान गया कि सबसे बड़ी कला स्वयं को वश में रखना है।

कथा का सार यह है कि आत्मनियंत्रण जब सध जाता है, तो समभाव आता है और यही समभाव अनुकूल-प्रतिकूल दोनों स्थितियों में हमें प्रसन्न रखता है। ■

–: दानवीर दाताओं के लिए विशेष सूचना :–

दानवीर दाताओं द्वारा जीवन ज्योत संस्था के बैंक खाते में दान करने के बाद, जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय पर ईमेल : jeevan_jyot@yahoo.in या वॉट्सअप नं. ९८६९२०६४०० पर अपना नाम, पत्ता, पॅनकार्ड नं. और दान कोर्पस या सामान्य में हैं यह जानकारी दे ।

दाता के उपरोक्त विवरण के अभाव में, संस्था को आपके दान की राशि पर ३५% कर का भुगतान करना पड़ता है। जिसके कारण कैंसरग्रस्त मरीज़ों के लिए उपलब्ध धनराशि में कमी आती है ।

भारत सरकार के वित्त मंत्रालय से विदेश से अनुदान स्वीकार करने के लिए विशेष स्वीकृति प्राप्त हुई है। अतः विदेश से दान देने के इच्छुक दानवीर दाताओंसे FCRA का बैंक खाता नंबर संस्था के कार्यालय से प्राप्त करने का अनुरोध है । प्राप्त जानकारी के अनुसार कोई अज्ञात व्यक्ति जीवन ज्योत संस्था के नाम का उपयोग करके डुप्लिकेट रसीद और प्रमाणपत्र पर अनुदान एकत्र कर रहा है। यदि दाताओं को कोई संदेह हो, तो अनुदान देने से पहले कृपया जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय में संपर्क करें ।

बैंक का नाम / IFSC नं.	खाता नं.	ब्रांच
एच.डी.एफ.सी. बैंक HDFC0000357	14731450000017	परेल

संस्था के अनेक समाजसेवी प्रकल्पों में से कुछ प्रकल्प दाताओं के नाम पर कार्यान्वित हैं

१)	श्रीमती नलिनीबेन बिपीनचंद्र मेहता	: कैंसर डिटेकशन सेन्टर
२)	श्रीमती चंपाबेन झुमखराम शाह	: कोलोस्टोमी बैग सेन्टर
३)	श्रीमती साकरबेन एल. डी. शाह (बिदड़ा)	: जलाराम अन्नदान क्षेत्र
४)	श्रीमती पुष्पावंती किशोरभाई भोजराज (मेराउ)	: ऐम्ब्युलन्स् सेवा
५)	श्रीमती नयनाबेन बिपीनभाई दाणी	: वरिष्ठ नागरिक आइकार्ड सेवा
६)	श्रीमान महेन्द्रभाई मणिलाल गांधी (लिंबोद्रा)	: ब्लैक मोलाइसीस दवा
७)	श्रीमान डुंगरशीभाई मुलजी मारू (काराघोघा)	: आधुनिक उपकरण.
८)	कु. साईशा - नाईशा दाणी	: टॉय बैंक
९)	मातुश्री खेतबाई देवराज मारु (हालापुर)	: चेरी. डिस्पेन्सरी
१०)	मातुश्री कांताबेन चुनीलाल गगलदास शाह (सेरीसा)	: जीवदया
११)	मातुश्री चंद्राबेन जयंतिलाल चत्रभुज मोदी *और* मातुश्री लाछबाई हीरजी करमशी भेदा (समाघोघा)	: हल्दी दूध योजना
१२)	श्री हरीराम माथुराम अग्रवाल (चेम्बुर)	: फल वितरण
१३)	मातुश्री सुशीलाबेन कांतिलाल दाणी (हरसोल)	: एनिमल ऐम्ब्युलन्स् मेईन्टनन्स
१४)	मातुश्री ललिताबेन बिहारीलाल शाह (सांताक्रुझ)	: ओजोन थेरेपी सेन्टर
१५)	मातुश्री ताराबेन जयंतिलाल वाघाणी (माटुंगा)	: जीवन ज्योत ड्रग बैंक
१६)	देविका सोमचंद लालका (अमलनेर) (स्व. कु. हंसाबेन रतनशी लोडाया)	: कॉम्पिटिशन् योजना
१७)	मयुरभाई महेता और जितेन्द्र पारेख	: ऐम्ब्युलन्स् मेईन्टनन्स
१८)	मातुश्री इन्दुमति महेन्द्र गांधी (लिंबोद्रा-बोरीवली)	: पेथोलोजी सेन्टर
१९)	श्रीमती मंजुलाबेन नटवरलाल शाह (हरसोल)	: ब्लड बैंक
२०)	श्रीमान नटवरलाल बुलाखीदास शाह (हरसोल)	: मेडिकल कैम्प
२१)	श्रीमती नलिनीबेन रसीकभाई जादवजी शाह	: ऐम्ब्युलन्स् सेवा
२२)	स्व. श्री इन्दरचंद लख्खीचंद खींवसरा (धुलिया)	: पस्ती योजना
२३)	डॉ. रमेश मंत्री	: अनाज वितरण
२४)	श्रीमति उषाबेन मणिलाल गाला (कंडागरा-गोरेगाम)	: जलाराम अन्नक्षेत्र
२५)	श्रीमती साकरबेन प्रेमजी चेरीटेबल ट्रस्ट (वर्ली)	: केमोथेरेपी विभाग

भजन

बाबा तेरे द्वार पे

(तर्ज : तूने मुझे बुलाया शेरावालिए...)

कर्मों का फल पाया, आया हार के, खाटू वाले बाबा तेरे द्वार पे ।
आया मैं हार के तेरे ही द्वार पे शरण में आपके ।।

ये जग झूठा झूठी माया, जान लिया तो पीछा छुड़ाया ।
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, कोई न साथ निभाया, आया हार के ।।
खाटू वाले बाबा तेरे द्वार पे....

मैं मूर्ख तू है ज्ञानी, तुझसे हमारी कुछ नहीं छानी।
मेरी तुझ से प्रीत पुरानी, कोई न लाड़ लड़ाया इतने लाड़ से ।।
खाटू वाले बाबा तेरे द्वार पे....

भूल क्षमा तू कर दे हमारी, शरण पड़े हैं मत कर देरी ।
मन को लुभाई सूरत तेरी, तूने हमें हंसाया बड़े प्यार से ।।
खाटू वाले बाबा तेरे द्वार पे...

जीवन है बाबा तेरे हवाले, इन बच्चों को तू ही सम्भाले ।
तेरी छवि को निरख निरख कर, मन मेरा हर्षाया बड़े चाव से ।।
खाटू वाले बाबा तेरे द्वार पे....

बिपीनभाई दाणी (हरसोल) एकता परिवार (I.G.) माटुंगा की प्रेरणा से

दाताओं के नाम	एरिया	योजना	रुपया
☛ स्व. मितेष महेन्द्र शाह के आत्मश्रेयार्थे			
ह. महेन्द्रभाई शामळदास शाह (हरसोल)	बोरीवली	जीवदया	५,०००/-
☛ स्व. अरविंदभाई वल्लभदास सोनेचा के आत्मश्रेयार्थे			
ह. हंसाबेन अरविंदभाई सोनेचा परिवार	कांदिवली	दवाइयाँ	२,०००/-
☛ स्व. महेन्द्रभाई मणिलाल गांधी (लिंबोद्रा) के आत्मश्रेयार्थे			
ह. ईन्दुबेन, अल्पेश, संजय गांधी परिवार	बोरीवली	जीवदया	१,२००/-
☛ स्व. नटवरलाल बुलाखीदास शाह (हरसोल) के आत्मश्रेयार्थे			
ह. मंजुलाबेन नटवरलाल शाह परिवार	कांदिवली	जीवदया	१,०००/-
☛ स्व. कमलाबेन और स्व. कांतिलाल नगीनदास शाह (हरसोल) के आत्मश्रेयार्थे			
ह. कांतिलाल नगीनदास शाह परिवार	भायंदर	दवाईयाँ	१,०००/-
☛ स्व. सरस्वतीबेन और स्व. रसीकलाल शाह (उनावा) के आत्मश्रेयार्थे			
ह. धवल शीरीष शाह	सायन	जीवदया	५००/-
☛ स्व. कमलाबेन और स्व. बेचरदास दोशी के आत्मश्रेयार्थे			
ह. दिलीप बी. दोशी	मुलुंड	दवाइयाँ	५००/-
☛ स्व. शारदाबेन और स्व. चिमनलाल साकळचंद शाह (उवारसद) के आत्मश्रेयार्थे			
ह. हेमा प्रदीप शाह	पूना	जीवदया	५००/-

व्यक्ति विशेष

एडविन हरबर्ट लैंड (१९०९–१९९१)

एडविन लैंड ने पोलेरॉइड कैमरे का आविष्कार करके इंस्टैंट फ़ोटोग्राफ़ी को जन-जन तक पहुंचाया। इसके अलावा, उन्होंने पोलेरॉइड सनग्लासेस का आविष्कार भी किया। एडविन लैंड के नाम पर ५३३ पेटेंट हैं और वे एडिसन की तरह ही धुआँधार आविष्कारक हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय एक दिन वे अपनी तीन साल की बेटी का फोटो खींच रहे थे । बेटी ने पूछा कि फोटो तत्काल क्यों नहीं दिख सकता। हालांकि यह सवाल बचकाना था, लेकिन इससे एडविन लैंड सोचने पर मजबूर हो गए। कोई और पिता होता, तो वह नादान बच्ची के इस सवाल को टाल जाता, लेकिन एडविन लैंड ऐसा नहीं कर सकते थे, क्योंकि वे पहले से ही भौतिक शास्त्र संबंधी प्रयोगों में लगे थे और १९३७ में पोलेरॉइड कॉरपोरेशन स्थापित कर चुके थे । अपनी बेटी के मासूम सवाल को सुनकर एडविन एच. लैंड प्रयोग करने में जुट गए। वे सोचने लगे कि जब कोई आदमी शर्ट या कार ख़रीदने के बाद तत्काल उसका उपयोग कर सकता है, तो फिर फोटोग्राफी के साथ ऐसा क्यों नहीं हो सकता? खींची हुई तस्वीरों को देखने के लिए कई दिनों या हफ़्तों का इंतज़ार क्यों करना पड़ता है? घंटों तक इसे धोने और डेवलप करने की ज़रूरत क्यों पड़ती है ?

लैंड ने जब पोलेरॉइड कैमरा बनाने के प्रयोग शुरू किए, तो उनके सामने सबसे बड़ा सवाल यह था कि छोटे से कैमरे के भीतर ही निगेटिव को डेवलप कैसे किया जाए, उसे धोया कैसे जाए, उसे सुखाया कैसे जाए, उसका पॉज़िटिव कैसे बनाया जाए, उसे दोबारा कैसे सुखाया जाए और ६० सेकंड के भीतर उसका प्रिंट कैसे बाहर निकाला जाए? लैंड के वैज्ञानिक दोस्तों ने कहा कि यह काम संभव नहीं है, इसलिए वे तत्काल दिखने वाले फ़ोटो के सपने को भूल जाएँ। लेकिन लैंड ने अपनी प्रयोगशीलता से इस असंभव दिखने वाले काम को भी संभव कर दिखाया।

अपनी बेटी के सवाल पूछने के छह महीने बाद ही एडविन लैंड ने समस्या सुलझा ली और २६ नवंबर १९४९ को ६० सेकंड में फ़ोटो डेवलप करने वाला पोलेरॉइड कैमरा बोस्टन में ९५ डॉलर में बिक्री के लिए उपलब्ध हो गया। जैसे ही स्टोर खुला, कैमरा ख़रीदने के लिए ग्राहकों की भीड़ लग गई। शुरुआत में ५६ कैमरे बनाए गए थे, जो कुछ ही घंटों में बिक गए। लैंड इस कैमरे में सुधार करते गए। शुरुआत में तो पोलेरॉइड कैमरे से सिर्फ़ सेपिया इमेज ही दिख सकती थी। १९५० तक उन्होंने ब्लैक एंड व्हाइट इमेज वाले कैमरे बना लिए। फिर १९६३ में उन्होंने पोलाकलर फ़िल्म बनाई, जिससे इंस्टैंट कलर फोटो खींचे जा सकते थे। १९५६ तक दस लाख पोलेरॉइड कैमरे बिक चुके थे और १९६२ तक चालीस लाख । १९७२ में लैंड ने रोशनी में डेवलप होने वाली ड्राई फ़िल्म बनाई। १९७७ में उन्होंने पोलैविज़न इंस्टैंट कैमरा बाज़ार में उतारा। अगर उसी वक़्त बीटामैक्स और वी. एच. एस. वीडियो टेप बाजार में नहीं आए होते, तो उनका यह कैमरा बेहद लोकप्रिय हो जाता। अपने आविष्कारों के दम पर लैंड व्यावसायिक जीवन से संन्यास लेने तक अरबपति बन चुके थे और ५३३ पेटेंट ले चुके थे। ■

मानवता के साद को मिला हुआ प्रतिसाद

नाम	एरिया	रुपया
☆ लीलाराम छापेरवाल	वाशी	३२,५००/-
☆ विक्रम वाडीलाल संघवी ह. रोनक एन्टरप्राईस	सांताक्रुझ	३१,०००/-
☆ संतोष सावंत	कांदिवली	२५,०००/-
☆ रचना कोठारी	बोरीवली	११,०००/-
☆ अशोक कानजी भीडे	नाशिक	१०,०००/-
☆ रविन्द्र कुमार जैन	उज्जैन	५,१००/-
☆ हेमा सतीश बोरा ह. निखिल सतीश बोरा	थाणे	५,०००/-
☆ पदमाकर चौधरी	चेम्बुर	२,५००/-

माँ की ममता

महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ था और पांडव पक्ष के लोग विजय की खुशी में सुख की निद्रा में लीन थे। उनकी ऐसी धारणा थी कि कौरव पक्ष का एक भी व्यक्ति शेष न रहने के कारण युद्ध समाप्त हो चुका है; किन्तु यह उनकी भूल थी। कौरव पक्ष का एक व्यक्ति जीवित था, जिसके हृदय में बदला लेने की भावना रह-रहकर उठ रही थी। वह था गुरु द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वत्थामा। उसने युद्ध के नियम ताक में रख दिये तथा एक हाथ में तलवार लिए उसने पांडवों के शिविर में प्रवेश कर द्रौपदी के पाँच निरीह पुत्रों का वध कर सन्तोष की साँस ली।

अश्वत्थामा का यह कुकृत्य जब दूसरे दिन द्रौपदी को विदित हुआ, तो वह पुत्रों के शोक में विह्वल हो गयी। उसके हृदय में क्रोध की ज्वाला धधक उठी। वह पांडवों से कटु स्वर में बोली, ''इस विश्वासघात का बदला लिया ही जाना चाहिये वधिक को उसका फल मिलना ही चाहिये।'' यह सुन अर्जुन भी उत्तेजित हो गया। वह द्रौपदी से बोला, ''पांचाली, शोक न करो। मैं उस नीच को अभी पकड़कर तुम्हारे सामने पेश करूँगा और इसका बदला लूँगा।''

भीम ने भी अर्जुन का साथ दिया और वे दोनों अश्वत्थामा को पकड़कर द्रौपदी के पास ले आये। अर्जुन बोला, ''यह रहा तुम्हारे निरीह पुत्रों की कपटपूर्वक हत्या करनेवाला नराधम ।'' और उसने अश्वत्थामा का शीश काटने के लिये तलवार उठायी ही थी कि द्रौपदी ने उसका हाथ थाम लिया। वह बोली, ''स्वामी, आप इसे पकड़कर लाये, इतने में ही मैं सन्तुष्ट हूँ। इसे छोड़ दिया जाये, क्योंकि इसकी माता कृपी अभी भी जीवित हैं और मैं नहीं चाहती कि वे भी इसके वियोग में शोक करें। पुत्र शोक का मुझे पूर्ण अनुभव है। मैं नहीं चाहती कि एक माता को शोक के सागर में डुबाया जाये ।'' अश्वत्थामा के सिर की मणि को निकालकर उसे मुक्त कर दिया गया। ■

कहानी

पथ के दावेदार

(गतांक से आगे)

– शरतचंद्र

अपूर्व के इस तरह बाहर चले जाने पर सभी आश्चर्य में पड़ गए। बैरिस्टर कृष्ण अय्यर ने पूछा - ''यह कौन है डॉक्टर ? बहुत सेण्टीमेंटल!'' उसकी बात में साफ उलाहना था कि ऐसे लोगों का यहां क्या काम !

डॉक्टर थोड़ा हंस पड़े, प्रश्न का उत्तर दिया तलवलकर ने - ''यह हैं मिस्टर अपूर्व हालदार ! हमारे ऑफिस में यह मेरे सुपीरियर अफसर हैं, लेकिन एकान्त अन्तरंग हैं- मेरे परम मित्र हैं! और सेण्टीमेंटल ? डॉक्टर साहब, आपने शायद हालदार के रंगून के प्रथम परिचय की कहानी नहीं सुनी? वह एक....!''

सहसा भारती पर दृष्टि पड़ते ही रुककर उसने कहा - ''वह जो कुछ भी हों, प्रथम परिचय के दिन से ही हम लोग मित्र हैं।''

डॉक्टर हंसकर बोले - ''सेण्टीमेंट नाम की वस्तु सर्वदा बुरी ही नहीं होती, कृष्ण अय्यर और तुम्हारी तरह सभी का कठोर पत्थर न बन जाने से काम न चलेगा, ऐसा सोचना भी ठीक नहीं।''

कृष्ण अय्यर बोले - ''ऐसा मैं भी नहीं सोचता, लेकिन इस कमरे को छोड़कर उनके विचरने का स्थान तो संसार में कम नहीं।''

तलवलकर मन-ही-मन क्रोधित हुए। जिनको बार-बार अपना परम मित्र बता रहे हैं, उनको उन्हीं के सामने अवांछित व्यक्ति सिद्ध करने की चेष्टा से उन्होंने अपना ही अपमान समझा और कहा - ''मिस्टर अय्यर, अपूर्व बाबू को मैं पहचानता हूँ। यह सच है हम लोगों के मन्त्र की दीक्षा लिए उन्हें बहुत दिन नहीं हुए, लेकिन मित्र की अकल्पित मृत्यु से थोड़ा सा विचलित हो जाना हम लोगों के लिए भी कोई भयानक अपराध नहीं है! संसार में चलने-फिरने की जगह अपूर्व बाबू के लिए यथेष्ट पड़ी हुई है, और मुझे आशा है कि इस मकान में भी उनको स्थान की कमी नहीं पड़ेगी।''

डॉक्टर बोले - ''अवश्य नहीं पड़ेगी, तलवलकर! अवश्य नहीं पड़ेगी।''

यह कहकर वे भारती को ही विशेष लक्ष्य करके बोले - ''लेकिन यह मित्रता नाम की वस्तु संसार में कितनी क्षणभंगुर है, भारती ! एक दिन जिसके सम्बन्ध में सोचा भी नहीं जा सकता, दूसरे दिन उससे जरा-सा कारण उपस्थित होते ही चिरविच्छेद हो जाता है। यह भी दुनिया में कोई अस्वाभाविक नहीं है, तलवलकर इसके लिए भी तैयार रहना अच्छा है। मनुष्य बड़ा ही दुर्बल है। तब इसी सेण्टीमेंट की जरूरत पड़ती है, उसका धक्का संभालने के लिए ।''

इन सब बातों का उत्तर कुछ नहीं, प्रतिवाद भी कुछ नहीं सब मौन रहे, लेकिन भारती का मुख म्लान हो उठा। भारती जानती है कि बिना कारण कुछ कहना डॉक्टर का स्वभाव नहीं।

डॉक्टर घड़ी देखकर बोले - ''मेरा तो जाने का समय हो रहा है भारती! रात की गाड़ी से जा रहा हूँ, तलवलकर!''

कहां और किसलिए अपने आप बताए बिना, ऐसा अनावश्यक कौतूहल प्रकट करने का नियम इन लोगों में नहीं है । तलवलकर ने पूछा - ''मेरे लिए आपका आदेश ?''

डॉक्टर ने हंसकर कहा - ''आदेश तो है, पर एक बात है। बर्मा में स्थान का अभाव हो भी जाए तो अपने देश में वह न होगा यह निश्चित है। मजदूरों पर जरा नजर रखना।'' तलवलकर ने गरदन हिलाकर कहा - ''अच्छा! फिर कब मुलाकात होगी ?''

डॉक्टर ने कहा - ''नीलकान्त जोशी के शिष्य हो तुम, फिर यह क्या प्रश्न कर दिया?''

तलवलकर चुप हो रहा। डॉक्टर ने फिर कहा - ''अब देर मत करो, जाओ। घर पहुंचते-पहुंचते भोर हो जाएगी । तो क्या यहां ही प्रैक्टिस करने का निश्चय कर लिया है, अय्यर ?''

कृष्ण अय्यर ने सिर हिलाकर सम्मति प्रकट की। किराये की गाड़ी बाहर प्रतीक्षा कर रही थी दोनों बाहर जाने लगे तो उस समय तलवलकर ने केवल एक बार कहा - ''अंधेरे में अपूर्व बाबू कहां चले गए, एक बार मुलाकात नहीं हुई... ।''

लेकिन इस बात का उत्तर देना किसी ने आवश्यक नहीं समझा। कुछ ही देर बाद गाड़ी के शब्द से मालूम हो गया कि वे लोग चले गए। तब डॉक्टर बोले - ''तुम क्या समझती हो अपूर्व चला गया?''

भारती बोली - ''नहीं, सम्भव है आसपास ढूंढ़ने से मिल जाएंगे। आपसे बिना मुलाकात किए वे न जाएंगे।''

डॉक्टर बोले- ''तुम यही काम करो। अधिक नहीं ठहर सकता, बहन!''

''नहीं, इसी बीच वे आ जाएंगे।'' यह कहकर दरवाजे के बाहर अन्धकार में भारती की चंचल आँखों की दृष्टि तीक्ष्ण हो उठी और परिचित पदशब्द की प्रतीक्षा में एकदम अधीर हो उठी। उसकी इच्छा हुई कि दौड़कर यहीं आसपास में से क्षण-भर में उसे ढूंढ आए, पर इतनी व्याकुलता दिखाने में उसे आज लज्जा मालूम हुई। डॉक्टर ने बिस्तर की तरफ देखा और भारती ने देखा तो मालूम हुआ कि अब पांच-छः मिनट से अधिक समय नहीं है। वह बोली - ''आप क्या पैदल ही जाएंगे?''

डॉक्टर बोले - ''नहीं। दो बज के बीस मिनट पर बड़ी सड़क से एक घोड़ागाड़ी निकलेगी, वह छःसात आने में स्टेशन पहुंचा देगी।''

भारती बोली - ''पैसा न देने पर भी पहुंचा देगी, पर जाने से पहले क्या सुमित्रा जीजी को देखने नहीं जाएंगे? वे सचमुच बीमार हैं।''

डॉक्टर ने कहा - ''मैंने कब कहा कि बीमार नहीं हैं? लेकिन डॉक्टर को दिखाए बिना बीमारी अच्छी कैसे होगी?''

भारती बोली - ''आपसे अच्छा डॉक्टर कौन मिलेगा?''

डॉक्टर ने मजाक में उत्तर दिया - "तब तो हो चुकी अच्छी ! अभ्यास छूटे बहुत दिन बीत चुके, फिर बैठा-बैठा किसी की चिकित्सा करता रहूँ-इतना समय कहां है मेरे पास?"

भारती बोल उठी - "समय आपको भला कहां ! कोई मर भी जाए तो आपको समय नहीं मिलेगा-क्या ऐसा ही देश का काम होता है?"

डॉक्टर का हंसता हुआ मुख मण्डल केवल क्षण-भर के लिए गम्भीर फिर पूर्ववत अपनी श्री से परिपूर्ण हो गया, पर तीक्ष्ण दृष्टि से भारती अपनी गलती समझ गई। वास्तव में सुमित्रा कौन है, डॉक्टर के साथ उसका सम्बन्ध क्या है, और कब किस तरह वह इस दल में शामिल हो गई, आज तक भी भारती इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानती। इन लोगों के सम्प्रदाय में व्यक्तिगत परिचय के सम्बन्ध में कौतूहली होना अत्यन्त निषिद्ध माना गया है। इसीलिए अनुमान के सिवा ठीक तौर से कुछ भी जान लेने का उपाय नहीं था। केवल स्त्री होने के नाते ही उसने सुमित्रा का मनोभाव कुछ मालूम कर लिया था, लेकिन अपनी उसी अनुभूति को आधार मानकर, अकस्मात इतना बड़ा इशारा कर बैठने से वह केवल संकोच में ही नहीं पड़ गई बल्कि भयभीत भी हो गई। भयभीत वह डॉक्टर से नहीं, सुमित्रा से हुई । यह बात किसी तरह भी उनके कान तक पहुंच जाने से काम बिगड़ जाएगा। उनका और परिचय मालूम न होने पर भी पहले से ही उस शान्त, तीक्ष्ण, विद्या - बुद्धिशालिनी रमणी की दुर्भेद्य गंभीरता के परिचय से कोई भी अपरिचित नहीं था। उनके स्वरूप और भाषण से, उनके प्रखर सौंदर्य के हर पदक्षेप से, उनके संयम - गम्भीर वार्तालाप से, उनके अचंचल आचरण की गम्भीरता से इस दल में रहते हुए भी उनके असीम दूरत्व को सब लोग स्वतः सिद्ध की भांति मानो अनुभव करते थे। यहां तक कि उनकी अस्वस्थता के सम्बन्ध में भी अपने-आप किसी प्रकार की आलोचना करने का भी किसी को साहस नहीं होता था। लेकिन एक दिन इस दुर्लभ्य कठोरता को

भेदकर उनकी अत्यन्त गुप्त दुर्बलता, उस दिन अपूर्व और भारती के सामने प्रकट हो पड़ी थी जिस दिन एक आदमी को विदा करते समय सुमित्रा अपने को संभाल न सकी थी, और उसी से वह मानो अपने को सबसे अलग बहुत दूर हटा ले गई है। वह विशाल व्यवधान, दूसरे की बिनमांगी सहानुभूति के आकर्षण से संकुचित होने का थोड़ा भी आभास मिलते ही, उसकी वह अपने जीवन के प्रति मन में छिपी गूढ़ वेदना एकाएक भड़क उठेगी, इस बात का निःसंदेह अनुभव करके भारती का क्षुब्ध चित्त आशंका से भर जाता था। *(क्रमशः)* ■

कर्करोग की भयानकता

दाताओं के नाम	एरिया	रुपए
❉ रुचि टंडन	भांडुप	४,०००/-
❉ अर्जुन हरीजन जयस्वार	अंधेरी	३,०००/-
❉ अर्पिता इन्डस्ट्रीस	भिवंडी	७५१/-

जीवदया

दाताओं के नाम	एरिया	रुपए
❉ स्व. श्री चंद्रु बी. फतनानी	माहिम	१,१००/-
❉ स्व. श्रीमी भगवंतीबाई बी. फतनानी	माहिम	१,१००/-

अवयव दान, नेत्रदान और त्वचादान

जीवन के बाद भी एक सत्कार्य अर्थात नेत्रदान और अवयव दान। आज के वैज्ञानिक युग में मृत्यु के पश्चात शरीर के कुछ विभिन्न अंगों से यदि किसी अन्य व्यक्ति को जीवनदान देना संभव हो तो उसे जलाना, नष्ट नहीं करना चाहिए, उसे दान करना चाहिए। मृत्यु के बाद भी सत्कार्य संभव है। अतः जीवन पश्चात का अवयव दान एक उत्तम दान हो सकता है।

पानी रे पानी

पारुल के पापा ने घर आते ही पत्नी से कहा कि ज़रा जल्दी से एक गिलास पानी ले आओ। आगे से जवाब मिला कि क्या बात है, बहुत जोर से प्यास लगी है? पति महाशय बोले, ''जी नहीं, मैंने अपना गला चैक करना है कि कहीं इसमें से पानी तो नहीं टपक रहा।'' इस बात से दोनों में महाभारत शुरू हो गई। शोर सुनकर पारुल मम्मी-पापा से बोली कि आप हर समय बच्चों की तरह क्यों लड़ते रहते हो ? मम्मी ने पारुल से कहा कि जरा इनसे पूछो कि यह मेरी किसी भी बात का सीधा जवाब क्यों नहीं देते? पापा ने दाँत पीसते हुए कहा कि जब हर सवाल ही उल्टा होता है, तो उसका मैं सीधा जवाब कैसे दे सकता हूँ? पारुल ने हाथ जोड़ते हुए कहा कि आप दोनों इतना तो ख्याल करो कि अब हम लोग सोसाइटी के फ्लैट में रहते हैं, हमारे पड़ोसी हमारे बारे में क्या सोचते होंगे? पारुल ने अपनी मम्मी से कहा कि आपने वह कहावत तो सुनी होगी कि एक चुप हज़ार को हरावे । मम्मी ने पूछा कि इसका क्या मतलब होता है? पारुल ने समझाया कि इसके सीधे से मायने यह है कि जो मनुष्य शांत रहता है, उससे हज़ार बोलने वाले भी हार मान लेते हैं। पारुल की मम्मी बोली कि बेटी हम दोनों तेरी तरह स्कूल-कॉलेज़ तो गये नहीं, इसलिये यह सारी बातें हम कैसे सीख पाते।

बेटी ने अपनी मां से कहा कि यदि आपने किताबी पढ़ाई नहीं भी की तो क्या हुआ, आप जिंदगी जीने की कला कुदरत से भी तो सीख सकते हो। पारुल के पापा ने हैरान होते हुए कहा कि कुदरत से कोई इंसान कैसे कुछ सीख सकता है ? इस बात पर पारुल ने कहा कि आप पानी का ही उदाहरण ले लो। यदि हम चाहें तो जिंदगी जीने के हर पहलू का फलसफा इस पानी से ही सीख सकते हैं। सबसे पहले तो पानी हमें यह सिखाता है कि खुद को हर परिस्थिति

के अनुसार ढालने में ही अक्लमंदी होती है। इसे जिस बर्तन में डालो, यह वैसा ही आकार ले लेता है। जिस रंग में मिलाओ, उसी जैसा दिखने लगता है। इसी के साथ यह भी संदेश देता है कि जिंदगी में खुशी हो या गम, हमारा एक ही लक्ष्य होना चाहिए कि चुपचाप सदा आगे बढ़ते रहो। पानी के गुणों में चार चांद लगाते हुए जौली अंकल इतना और कहना चाहते हैं कि यह जहां हर किसी को खुशहाली देता है, वहीं समय आने पर इसकी एक बूंद सीप का अनमोल मोती बन सकती है। ■

काव्य

जमीं
जहां कहीं है कुछ, कहीं है साया
जन्म मैंने भी और
तुम ने भी यहीं है पाया।
ज़मी, यहीं हकीकत है
इस के सिवा
कहीं कुछ भी नहीं
सब आँखों का धोखा है।
आसमान
जो हमारी पहुँच से बाहर है
वो तुम्हारी आँखों में हो,
या मेरी निगाहों में
दिखाई देता है
लेकिन कभी नहीं मिलता।
ज़मीं
यहीं देती है
मिलन भी,
तन्हाई भी
यहीं जमी सफर है
यही है मंजिल भी ।
न मैं तलाश करूँ
तुम में
जो नहीं हो तुम
न तुम
उम्मीद करो मुझ से
जो नहीं हूँ मैं।
■

एक दशक की देरी और एक डॉलर की कमी

डॉक्टर आमतौर पर कैंसर को उसकी अंतिम अवस्था में पहचान पाते हैं। दुर्भाग्य से, जिस कैंसर को सामान्य तौर पर विकसित होने में १० से २० साल लगते हैं, वह कैंसर इतना विकसित हो जाता है कि इसके लक्षण प्रत्यक्ष या एक्स-रे पर दिखाई देने लगते हैं। डॉक्टर आक्रामक सर्जरी कीमोथैरेपी और विकिरण का सहारा लेते हैं, लेकिन मरीजों को बहुत कम मदद मिल पाती है।

पिछली बार मैंने अपने एक मरीज़ में फेफड़ों के कैंसर की पहचान की। कैंसर रोग विशेषज्ञ ने उसे कीमोथैरेपी की सलाह दी। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा डॉक्टर दावा करते हैं कि वे फेफड़ों के कैंसर को ४० प्रतिशत तक घटा सकते हैं । मेरा मरीज़ डॉक्टर द्वारा बताए आँकड़ों से प्रोत्साहित हुआ, लेकिन तभी तक, जब तक उसने डॉक्टर से घटने का मतलब नहीं पूछा। कैंसर रोग विशेषज्ञ ने जवाब दिया - ''यदि कैंसर सफलतापूर्वक घट जाता है, तो तुम्हारी ज़िंदगी तीन महीनों तक बढ़ सकती है। यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि मेरा मरीज़ यह सुनने की उम्मीद नहीं कर रहा था। यह आम दुखद सी कहानी है, जो कैंसर के हर मरीज़ एक साथ घटती है।

जब मेरी खुद की माँ के मस्तिष्क के कैंसर की पहचान हुई, तो रेडिएशन थैरेपिस्ट ने कहा कि इस बात का सिर्फ़ एक प्रतिशत अवसर है कि थैरेपी से उनका जीवन बढ़ सके। मेरी इच्छा के विरुद्ध माँ ने अपना इलाज कराया। छह महीने बाद उनकी मृत्यु हो गई, जिसका कारण न सिर्फ कैंसर था, बल्कि इलाज के कारण हुई कमज़ोरी और बीमारी भी थी। हो सकता है कि इस तरह का आक्रामक इलाज मरीज़ों के जीवन को कुछ महीनों या साल के लिए बढ़ा दे, लेकिन इस थोड़े से लाभ के लिए पहले से कमज़ोर मरीज़ों को इतना कष्ट देना अत्याचार के समान है।

वर्तमान में हम लोग कैंसर के विरुद्ध लड़ाई हार रहे हैं। इससे पहले कि

इस बीमारी से होने वाली मौतों की संख्या में कमी आए, क्या आपको इस बात पर कोई शक है कि इस असाध्य बीमारी को इसके विकास की शुरुआती अवस्था में ही रोक लेना चाहिए? आप जानते हैं कि हम सभी को यही आशा है कैंसर के विकास में ऑक्सीडेटिव तनाव की भूमिका को समझने से इसके बचाव और इलाज की नई संभावनाओं का पता चलता है। ■

पांव के सड़े घाव

एक लड़की के पांव और पांव की उंगलियां सड़ गई थी। उंगलिया लटक गई थी। डाक्टरों ने जवाब दे दिया था । तब मैंने दूर्वा (दूध) का प्रयोग किया। दूर्वा (देशी जो पूजा के लिए लम्बे पत्तों वाली) को पीसकर लगाया। हरी दूब के लेप को रोजाना सुबह शाम लगातार १५ दिन लगाने से उस लड़की के पांव के सड़े घाव ठीक हो गए और उंगलियां भी ठीक हो गई। दूब को पीसकर लगाने से मधुमेह के घाव भी ठीक हो जाते हैं। ■

जलाराम अन्नदानक्षेत्र

दाताओं के नाम	एरिया	रुपए
❉ रोहन भुवड, लक्ष्मीबाई जयस्वाल, वसंत रामचंद्र भोसले, शिवचरणलाल जयस्वाल, निर्मल भोसले ह. सुरेखा सुरेन्द्रकुमार जयस्वाल	दादर	२०,०००/-
❉ आराध्य लोके के जन्मदिन के अवसर पर ह. बिपीन सुशील लोके	दादर	७,०००/-
❉ स्वीटी कपूर के जन्मदिन के अवसर पर	भांडुप	५,०००/-
❉ सुधीर विष्णु परकाले	कालाचौकी	४,०००/-
❉ दीपक पांडे की पुण्यस्मृति में ह. स्मिता दीपक पांडे	चेम्बुर	४,०००/-

गत महीने की संस्था की गतिविधियाँ

- अन्नक्षेत्र में भोजन के २३ तथा हल्दी दूध के ११ कार्ड बनाए।
- १४२ कैंसरग्रस्त परिवारों को अनाज वितरित किया गया ।
- प्रतिदिन ८३८ मरीज़ों को फल दिया गया ।
- ३ मरीज़ों को रक्त के लिए सहायता प्रदान की गई।
- १३ मरीज़ों के रहने की व्यवस्था की गई।
- ४ मरीज़ों को अलग-अलग संस्था में आवेदन पत्र देकर उपचार पत्र बनाकर दिए गए, जिससे उन्हें अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है।
- कैंसर पीड़ित मरीजों को ९,३७,५००/- रु. की दवाएँ दी गई ।
- अन्य मरीजों को ३,३३,२८०/- रु. की दवाएँ दी गई ।
- १४ घायल पशु-पक्षीओं को ईलाज के लिए अस्पताल पहुँचाया गया ।
- पशु-पक्षीओं के ईलाज के लिए रु. ४,२३,५५०/- की दवाएँ दी गई ।
- अपंग व्यक्तिओं को ४ वोकर, २ वॉकिंग स्टीक, ३ कमोड चेअर, ४ व्हिलचेअर, ३ पलंग, ४ ऑक्सिजन मशीन और ३ ऑक्सिजन सिलेण्डर दिए गये।
- ४ कैंसरग्रस्त मरीज़ों की फाईल बनाई गई ।
- ३८ मरीज़ों ने निःशुल्क ऐम्ब्युलेंस् सेवा का लाभ लिया ।
- १३ कर्करोग पीड़ितों को कोलोस्टॉमी बेग कम कींमत पर दी गई ।
- १ लावारिस कैन्सरग्रस्त मरीज का अंतिम संस्कार किया गया ।
- रास्ते में बेहाल स्थिति में पड़े रहनेवाले ६ व्यक्तिओं को वृद्धाश्रम पहुँचाया गया।

देहदान प्रतिज्ञा पत्र

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एन्ड केअर ट्रस्ट की विभिन्न प्रवृत्तियों में से एक प्रवृत्ति 'देहदान' की है, किसी भी भाई-बहन की इच्छा वसियत (विल) (मरने से पहले के घोषणापत्र) बनाने की हो, तो स्वतः के हाथ से एक प्रतिज्ञापत्र भरना होगा। स्वतः के शरीर या शरीर के किसी भी भाग को आधुनिक प्रगति के लिए या मेडिकल साइन्स के विद्यार्थियों के काम में आए इस हेतु से प्रतिज्ञापत्र बनाए गये हैं। प्रतिज्ञापत्र जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय से आपको मिलेंगे या कुरियर द्वारा आपको पहुंचा दिये जाएंगे।

अर्जुन का प्रभु प्रेम

– आशा दसोंदी *(माटुंगा)*

महाभारत युद्ध के बाद भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन द्वारिका वापस लौट रहे थे । इस बार रथ को भगवान ने नहीं पर अर्जुन ने स्वयं चलाया । द्वारिका पहुंचते ही अर्जुन बहुत ही थक गए थे । इसलिए अतिथिगृह में चले गए और गहरी निंद्रा में लीन हो गए ।

शाम का वक्त हुआ । तरह-तरह के व्यंजन तैयार हुए और देवी रुक्मणीजी प्रेमपूर्वक भगवान को भोजन परोसने लगी और बोली, ''स्वामी भोजन ग्रहण कीजिए ।''

भगवान बोले, ''रुक्मणीजी आपको तो मालूम है ना कि अगर कोई अतिथि अपने घर आए हैं तो उनके बिना एक दाना भी हम ग्रहण नहीं कर सकते।'' यह सुनकर रुक्मणीजी बोली, ''प्रभु आप भोजन ग्रहण कीजिए । मैं अर्जुन को बुलाकर लाती हूं ।''

जब वे अतिथि गृह में पहुंची तो देखा कि अर्जुन गहरी निद्रा में थे । किंतु वह निद्रा साधारण सी नहीं थी । अर्जुन के रोम रोम से 'कृष्ण... कृष्ण...' की ध्वनि आ रही थी । उनके पूरे शरीर से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हर कोशिका भगवान का नाम जप रही हो । वह अर्जुन को जगाना भूल गई और उनके नेत्र नम हो गए । वह भी प्रेम से ताली बजाने लगी ।

इस तरफ रुक्मणी न आई देखकर भगवान ने नारदजी को कहा, ''देखो तो सही, भोग ठंडा हो रहा है । कोई अर्जुन को बुलाकर लाया की नहीं?'' नारदजी तुरंत वीणा लेकर अतिथिगृह पहुंचे ।

उन्होंने जो दृश्य वहां देखा तो स्तब्ध हो गए । अर्जुन के रोम रोम से प्रभु का कीर्तन हो रहा था और रुक्मणीजी ताली बजा रही थी । नारदजी को दिव्य प्रेम का साक्षात्कार हुआ और वह भी अर्जुन को जगाना भूल गए और अपनी वीणा पर 'गोविंद.... गोविंद...' का मधुर कीर्तन करने लगे ।

इस तरफ सत्यभामाजी ने देखा कि भोग ठंडा हो रहा है और प्रभु ऐसे ही बैठे हैं। प्रभु से पूछा तो बोले, ''हम अतिथि के बिना भोजन नहीं करते। रुक्मणीजी और नारद दोनों बुलाने गए गए हैं पर वापस लौटे नहीं है।'' यह सुनकर सत्यभामा बोली, ''आप भोजन शुरू कीजिए। मैं उनको बुलाकर लाती हूं।''

सत्यभामा जब अतिथिगृह पहोंची तो वहां का दृश्य देखकर मोहित हो गई। एक ओर अर्जुन का निष्कलंक भक्ति रस, दूसरी ओर रुक्मणीजी की तालियां और तीसरी ओर नारदजी की वीणा - तो सत्यभामाजी भी नृत्य करने लगी। उनका मन उस भाव में इतना डूब गया कि वह भी अर्जुन को जगाना भूल गई ।

उधर भगवान बोले, ''सब कहते हैं कि भोग ठंडा हो रहा है पर कोई अर्जुन को लेकर आ नहीं रहा, हमें स्वयं जाकर देखना होगा कि वहा क्या हो रहा है कि सब हमें भूल गए ?''

भगवान जब वहां पहुंचे और जो दृश्य देखा वह अद्‌भुत था । भगवान के नेत्र सजल हो गए । प्रेम के अश्रु उनके नेत्रों से बहने लगे। वह आगे बढ़े और अर्जुन के चरणों को अपने करकमलों द्वारा दबाना शुरू किया । जैसे ही भगवान के अश्रु अर्जुन के चरणों पर पड़े की अर्जुन चौककर उठे ।

अर्जुन बोले, ''प्रभु आप यह क्या कर रहे हो ? आप मेरे चरण दबा रहे हो !''

भगवान ने मुस्कुरा कर कहा, ''अर्जुन, तुमने मुझे अपने रोम रोम में बसा लिया है । तुम्हारा हर कण मेरा नाम जपता है । तुम मुझे इतना प्रेम करते हो, तो मेरे लिए तुम सबसे प्रिय हो ।

जो भक्ति दिखावे की न हो... न प्रयत्न की... जो भक्ति स्वाभाविक हो - जो भक्ति सांसों में बसी हो - जो प्रेम निराकार न होकर सजीव हो, वही प्रेम प्रभु को बांधता है ।

"There is no worship like silence." ■

कहानी

मूरखराज

(गतांक से आगे)

बलजीत ने कहा - ''प्यारे भाई, मेरे पास सिपाही काफी नहीं हैं। इसलिए दो-एक टुकड़ी और चाहिए। बना दो।''

प्यारे ने सिर हिलाया और कहा - ''नहीं, अब मैं और सिपाही नहीं बनाकर दूँगा।''

''लेकिन तुमने तो वचन दिया था कि बना दोगे ।''

''हां दिया था, मगर बनाऊँगा नहीं ।''

''बड़े मूरख हो । क्यों नहीं बनाओगे?''

''तुम्हारे सिपाहियों ने एक आदमी की जान ले ली, मैंने सुना है। उस दिन सड़क के किनारे का खेत में जोत रहा था, तभी एक औरत गाड़ी में बैठी जा रही थी। मैंने कहा - ''क्या बात है कोई मर गया?''

उसने बताया - ''मेरे पति को लड़ाई में बलजीत के सिपाहियों ने मार डाला।''

''मैं तो समझता था, सिपाही अपना गाना बजाना किया करेंगे और लोगों का मन बहलायेंगे, मगर उन्होंने तो आदमी की हत्या कर डाली है, अब मैं और ज्यादा सिपाही बनाकर नहीं दूँगा।''

फिर प्यारे ने सिपाही नहीं बनाए।

धनी धनवीर ने भी प्यारे को कुछ और सोना बनाने के लिए कहा - ''लेकिन इस पर प्यारे ने सिर हिला दिया, कहा - ''नहीं अब मैं तुम्हारे लिए और ज्यादा सोना भी नहीं बनाऊँगा।''

''लेकिन तुमने तो वादा किया था?''

''किया था, लेकिन अब मैं नहीं बनाऊँगा।''

''भला क्यों मूरख?''

''क्योंकि तुम्हारी सोने की मोहरों ने हमारे हरिया की बेटी की दुधारू गाय हर ली है।''

''वो कैसे?''

''कैसे क्या, हर जो ली है । उसके पास एक गाय थी । बाल बच्चे उसका दूध पिया करते थे, मगर उस रोज हरीचन्द की धेवती हमारे घर दूध मांगने आई।'' मैंने कहा - ''क्यों तुम्हारी गाय क्या हुई?'' बोली- '''महाजन धनवीर का कारिन्दा आया था, उसने सोने के तीन सिक्के अम्मां को दिए, इसलिए अम्मां ने गाय उसे दे दी। अब कहां घर में दूध रखा है! मैं तो समझता था कि सोने की मुहरें लेकर तुम अपना और लोगों का जी बहलाव करोगे, मगर उनसे तो तुम बच्चों का दूध छीनने लगे हो । नहीं, मैं और मुहर तुम्हें बनाकर नहीं दूँगा।'' प्यारे ने उसे भी मोहरें बनाकर नहीं दीं।

दोनों भाई अपना मुंह लटकाकर वापस आ गए। आते हुए आपस में सलाह-मशवरा करने लगे कि किस प्रकार मसला हल हो?

बलजीत ने सुझाव दिया - ''सुनो मैं बताता हूँ। एक काम करो। तुम तो कुछ सिपाहियों के लिए मुझे धन दो और में तुम्हें अपना आधा राज्य दिये देता हूँ। बस फिर धन की रक्षा के लिए काफी सिपाही तुम्हारे पास हो जायेंगे।''

धनवीर राजी हो गया।

फिर दोनों भाइयों ने आपस में बंटवारा कर लिया। इस प्रकार वे दोनों ही राजा बन गए। दोनों के पास रियासत हो गई और किसी के पास भी धन की कमी नहीं रह गई थी।

प्यारे अपने गांव के मकान में ही रहा। वह गूंगी बहन के साथ खेत में काम करता और माता-पिता की सेवा करता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि उनके पालतू कुत्ते को कहीं से खाज लग गई। वह ऐसा क्षीण होने लगा कि जीने की उम्मीद ही नहीं रही । एकदम मराऊ हो गया । प्यारे को उस पर दया आ गई।

उसने अपनी बहन से कुछ रोटी मांगी, फिर टोपी में रखकर कुत्तों को डालने वह बाहर आया । टोपी फटी हुई थी । इसलिए जो टुकड़ा कुत्ते को फेंका था

उसके साथ यह जड़ी भी आ गिरी। कुत्ते ने रोटी खाई और साथ में वह जड़ी भी खा गया और एकदम चंगा हो गया।

उसका सारा रोग जाता रहा, और वह उछलकूद मचाने लगा। कभी वह भौंकता तो कभी शोर मचाता, दुम हिलाता और किलोलें करता, यानि बिल्कुल पहले की तरह चुस्त- तन्दुरुस्त हो गया।

मां-बाप को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा - ''कुत्ते का रोग पल भर में तुमने कैसे ठीक कर दिया? यह तो अभी बीमार पड़ा हुआ था?''

प्यारे ने बताया - ''मेरे पास एक जड़ी की दो जड़ थीं। उनमें से एक कोई खा ले तो सभी रोग मिट जायेंगे । तो उन्हीं जड़ी में से एक जड़ी इस कुत्ते ने भी खा ली थी। उसी समय की बात है कि राजा की बेटी बीमार पड़ गई। राजा ने गांव शहर चारों तरफ ऐलान करवा दिया कि जो भी मेरी बेटी को ठीक कर देगा, उसे खूब ईनाम मिलेगा, और वह कुंवारा हुआ तो राजकुमारी की शादी भी उसी के साथ कर दी जाएगी।'' दूसरे गांव की तरह प्यारे के गांव में भी यही ऐलान हुआ ।

माता-पिता ने इस ऐलान को सुनकर प्यारे को बुलाया।

प्यारे ने आकर पूछा - ''जी पिताजी कहिये क्या आज्ञा है, मेरे लिए? आपने मुझे क्यों बुलाया है?''

माता-पिता ने कहा - ''तुमने राजा की डोंडी ऐलान की बात सुन तो ली है न? तुम कह रहे थे कि ऐसी जड़ी है तुम्हारे पास जिससे सारे रोग समाप्त हो जाते हैं। सो जाओ और उससे राजकुमारी को आराम कर देना। बस पूरा जीवन फिर चेन हो जायेगा ।''

''अच्छी बात है।'' प्यारे ने कहा।

फिर प्यारे राजकुमारी के पास जाने को तैयार हो गया।

उसने हाथ-मुंह धोया, कपड़े पहने, लेकिन जैसे ही दरवाजे के बाहर पहुंचा वहां उसे एक भिखारिन मिली। उसका हाथ गल रहा था। उसके कारण वह लूली हुई जा रही थी। *(क्रमशः)* ■

चिकित्सा

चैतन्य चिकित्सा

स्वास्थ्य हेतु पैरों का बराबर होना आवश्यक

हम प्रतिदिन हजारों कदम चलते हैं। यदि हमारे दोनों पैर बराबर न हुए, एक पैर बड़ा और दूसरा छोटा हुआ तो निश्चित रूप से एक पैर पर अधिक दबाव पड़ता है। फलतः हमारे शरीर का दाहिना बायाँ संतुलन बिगड़ने लगता है। शरीर की चाल बदल जाती है और बाह्य शारीरिक विकास असंतुलित होने लगता है। उठने बैठने, खड़े रहने, सोने अथवा चलने फिरने की प्रक्रियाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। शरीर के किसी भाग पर अनावश्यक दबाव लगातार पड़ते रहने से वह भाग रोग ग्रस्त हो सकता है। अधिकांश पैरों, कमर एवं गर्दन के रोगों का प्रारम्भ इसी कारण होता है। फिर चाहे उसे साइटिका, स्लीप डिस्क, घुटने का दर्द, स्पोन्डोलायसिस आदि किसी भी नाम से क्यों न पुकारा जाता हो ? जैसे ही दोनों पैरों को बराबर कर दिया जाता है, ऐसे अनेक पुराने असाध्य रोगों का उपचार सहज एवं प्रभावशाली होने लगता है।

पैर बड़े-छोटे क्यों होते हैं ?

हमारा शरीर दाहिने एवं बायें बाह्य दृष्टि से लगभग एक जैसा लगता है। परन्तु उठने-बैठने, खड़े रहने, सोने अथवा चलते फिरते समय प्रायः हम अपने बायें और दाहिने भाग पर बराबर वजन नहीं देते। जैसे खड़े रहते समय किसी एक तरफ थोड़ा झुक जाते हैं। बैठते समय सीधे नहीं बैठते । सोते समय हमारे पैर सीधे और बराबर नहीं रहते । स्वतः किसी एक पैर को दूसरे पैर की सहायता और सहयोग लेना पड़ता है। फलतः एक पैर के ऊपर दूसरा पैर स्वतः चला जाता है। ऐसा क्यों होता है ? अधिकांश व्यक्ति किसी भी एक आसन में लम्बे समय तक स्थिरता पूर्वक क्यों नहीं बैठ सकते ? इसका मतलब उनका शरीर असंतुलित होता है। उनके पूर्ण नियंत्रण में नहीं होता है। हम सीधे क्यों नहीं

सो सकते ? बार-बार करवटें क्यों बदलनी पड़ती हैं? निद्रा में पैर के ऊपर पैर क्यों चला जाता हैं ?

पैर को संतुलित करने की विधि–

रोगी को सीधा सुलाएं। दोनों पैरों के टखने को मिलाकर देखें कि दोनों के केन्द्र बराबर हैं या नहीं। टखनों के साथ-साथ पैर के दोनों पैरों के अंगूठों की ऊँचाई जमीन से बराबर हों तो दोनों पैरों की लम्बाई बराबर होती है अन्यथा जो अंगूठे का ऊपरी भाग नीचा होता है वह पैर दूसरे पैर से छोटा होता है। छोटे पैर के अंगूठे को धीरे-धीरे तब तक खींचें जब तक दोनों पैर बराबर न हो जायें। चन्द दिनों तक नियमित यह प्रक्रिया करने से दोनों पैर बराबर रहने लगते हैं।

बहुत बार किसी भी कारण से संबंधित पैर के अंगूठे को खींचना संभव नहीं होता। ऐसी परिस्थितियों में निम्न विधि द्वारा दोनों पैरों को बराबर किया जा सकता है।

रोगी को सीधा सुलाएं, पूर्व विधि के अनुसार पता लगायें कि कौनसा पैर छोटा या बड़ा है। जिस छोटे पैर को बराबर करना हो, उस घुटने को पेट के जितना नजदीक बिना किसी दर्द ले जा सकते हैं, ले जायें। एक हाथ से उस पैर के घुटने पर हल्का सहनीय दबाव रखें। अब यदि वह पैर छोटा हो और उसे बड़ा करना हो तो उस छोटे पैर की पिण्डली को दूसरे हाथ से पकड़ दूसरे घुटने की तरफ मोड़ें। ऐसा करने से छोटा पैर बड़ा हो जाता है। दर्द, फ्रेक्चर, पूर्व में की गई शल्य चिकित्सा आदि किसी कारण वश यदि छोटे पैर को मोड़ना संभव न हो तो बड़े पैर को छोटा करने के लिए बड़े पैर के घुटने को पेट के पास जितना ले जा सकते हैं, ले जायें। उसके पश्चात् उस बड़े पैर की पिण्डली को एक हाथ से पकड़ उस पैर की पिण्डली को बाहर की तरफ जितना बिना किसी असुविधा मोड़ सकते हैं, मोड़ें। ऐसा करने से बड़ा पैर छोटा हो जाता है।

जब तक दोनों पैरों को बराबर नहीं किया जाता कोई भी चिकित्सा पद्धति पूर्ण प्रभावशाली ढंग से कार्य नहीं कर सकती। जिस प्रकार फूटे हुए घड़े को भरने से पूर्व छिद्र बन्द करना आवश्यक होता है। बिना छिद्र बंद किये, कितना ही पानी क्यों न डाले, घड़ा स्थायी रूप से भरा हुआ नहीं रह सकता । मोटर कार को चलाने से पूर्व उसके चक्कों में हवा का उचित दबाव आवश्यक होता है। गाड़ी बहुत ही अच्छी हो, चालक भी बहुत अनुभवी हो, परन्तु जैसे चक्कों में वायु का दबाव बराबर न हों, ऐसी गाड़ी में निर्विघ्न यात्रा कर गन्तव्य स्थान पर पहुँचना संदिग्ध होता है। ठीक उसी प्रकार यदि दोनों पैर बराबर न हों तो प्रातः कालीन भ्रमण जैसी अच्छी प्रवृति भी लाभ के स्थान पर कभी-कभी हानिकारक हो सकती है। जिस प्रकार खेती में बीज बोने से पूर्व खेत की सफाई एवं उस पर हल जोतना तथा खाद देना आवश्यक होता है। ठीक उसी प्रकार उपचार से पूर्व दोनों पैरों को बराबर करने से उपचार प्रभावशाली और स्थायी हो जाता है। कभी-कभी तो असंतुलन दूर होते ही रोगी को तत्काल जो राहत मिलती है वह अच्छी से अच्छी दवा से भी ज्यादा प्रभावशाली होती है। स्वस्थ अवस्था में भी नियमित निरीक्षण कर दोनों पैरों को बराबर रखने से रोग होने की संभावना कम हो जाती है। ■

हल्दी दूध योजना

दाताओं के नाम	एरिया	रुपए
❖ स्व.श्री चंद्रु बी. फतनानी	माहिम	१,१००/-
❖ स्व. श्रीमती भगवंतीबाई बी. फतनानी	माहिम	१,१००/-
❖ भगवान बी. फतनानी	माहिम	१,१००/-

'सम्मोहक शक्ति' का रहस्य

१९५० के दशक में डॉ. थियोडोर जेनोफोन बार्बर ने सम्मोहन पर गहन शोध किया। जब वे वॉशिंगटन, डी.सी. में अमेरिकन यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञान विभाग में थे, तब भी और हार्वर्ड में लैबोरेटरी ऑफ सोशल रिलेशन्स से जुड़ने के बाद भी। साइंस डाइजेस्ट में उन्होंने लिखा थाः

हमने पाया है कि सम्मोहन के वश में लोग आश्चर्यजनक चीजें करने में तभी सक्षम होते हैं, जब उन्हें विश्वास हो कि सम्मोहन करने वाले के शब्द सत्य है... जब सम्मोहन करने वाले ने सम्मोहित व्यक्ति को इस बिंदु तक मार्गदर्शन दिया है, जहाँ उसे विश्वास हो कि सम्मोहन करने वाले के शब्द सत्य कथन हैं, तो वह व्यक्ति अलग तरह से व्यवहार करने लगता है, क्योंकि वह अलग तरह से सोचता और यकीन करता है।

सम्मोहन हमेशा से रहस्यमय रहा है, क्योंकि यह समझना हमेशा मुश्किल रहा है कि सिर्फ विश्वास इस तरह का असामान्य व्यवहार कैसे उत्पन्न कर सकता है। हमेशा से ऐसा लगता था कि कोई अन्य चीज़ कार्य करती है, कोई अबूझ शक्ति कार्य करती है।

बहरहाल, सरल सच्चाई यह है कि जब सम्मोहित होने वाले व्यक्ति को विश्वास हो जाता है कि यह बहरा है, तो वह ऐसा व्यवहार करता है मानो वह बहरा हो। जब उसे विश्वास हो जाता है कि उसे दर्द महसूस नहीं हो सकता, तो वह बिना एनस्थीशिया के ऑपरेशन करा सकता है। रहस्यमय शक्ति का कोई अस्तित्व ही नहीं होता। (''कुछ यू बी हिप्नोटाइज्ड ?'' साइंस डाइजेस्ट, जनवरी १९५८)।

गौर करें कि उनकी टिप्पणियाँ १९५८ में प्रकाशित हुई थीं। आज सम्मोहन को चिकित्सा के साधन के रूप में काफी स्वीकार और इस्तेमाल किया जाता है। सम्मोहन और आत्म सम्मोहन वज़न कम करने में कई लोगों की मदद करते हैं। और लिपोसक्शन की तुरत-फुरत सर्जरी को अनावश्यक बना देते हैं, जो भावनात्मक बनाम वास्तविक ऑपरेशन के मेरे उदाहरणों की आदर्श उपमा है। इन मामलों में सम्मोहन ही छुरी है। दंतचिकित्सा में सम्मोहन का इस्तेमाल लगभग

अनियंत्रित और अति भयभीत मरीजों के उपचार के लिए किया जाता है। कई मायनों में, यह एनस्थीशिया के समस्याकारी समाधान का पूर्णतः सफल विकल्प साबित होता है।

बचपन की प्रोग्रामिंग, अतीत के अनुभव और समकक्षों की प्रोग्रामिंग एक तरफ़ हैं तथा कल्पना, आत्म- छवि और सर्वो-मेकेनिज्म दूसरी तरफ़ । इन दोनों के बीच की कड़ियों के बारे में मेरा निष्कर्ष यह है कि लोग अपनी आत्म-छवि से लगभग सम्मोहित हो जाते हैं । वास्तव में, कई लोग तो बिना पहचाने किसी सम्मोहक सुझाव तले जीवन भर लगभग - ''नींद में चलते'' रहते हैं। क्वेंटिन रेनल्ड्स की पुस्तक इन्ट्यूशन : योर सीक्रेट पॉवर में एक सम्मोहक का कथन दिया गया था - ''रोगी इस उम्मीद में मेरे पास आते हैं कि मैं उन्हें सम्मोहित करके उनके जीवन को सही कर दूँगा। वास्तव में उनमें से कई तो पहले से सम्मोहन में जी रहे हैं और उन्हें वास्तविकता की खुराक़ की ज़रूरत होती है।''

अगर आप बचपन में किसी अंधेरी लिफ्ट में कई घंटों तक फँसे रहे हों और बुरी तरह डर रहे हों, तो आपका यह डर हावी हो जाएगा। इसके बाद आप लिफ्ट से डरने लगेंगे । चालीस साल बाद भी आप लिफ्ट में घुस नहीं पाएँगे, भले ही सुरक्षा के आँकड़े जो भी हों, वास्तविक जानकारी, प्रदर्शन, लिफ्ट का इस्तेमाल करने वाले हज़ारों लोगों के अवलोकन जो भी हों या दर्जनों सीढ़ियाँ चढ़ने की चुनौती कितनी भी कठिन क्यों न हों। आप अब भी चालीस साल पहले की सम्मोहक तंद्रा में हैं !

फिर भी थोड़ा सा मनन करने पर आपको पता चलेगा कि यह हमारे लिए बहुत अच्छी चीज़ है कि हम जिसे सच मानते हैं या जिसकी हम सच के रूप में कल्पना करते हैं, हम उसी के अनुरूप महसूस करते हैं और कार्य करते हैं। इस सबका यह मतलब नहीं है कि यह सिस्टम अपने आप में - ''बुरा'' है । इसके लिए तो सिर्फ़ यह सीखना ज़रूरी है कि - ''सिस्टम'' का बेहतर इस्तेमाल कैसे किया जाए। ■

सावधान

– भारती पी. शाह *(एहमदाबाद)*

शाम के ४:०० बजे पाठशाला छूटने का समय हुआ । प्युन ने शाला छूटने की घंटी बजाई टन-टन-टन... पाठशाला के विद्यार्थी कक्षा के बाहर निकलने लगे । कोई वेन में बैठा, कोई ऑटो रिक्शा में, तो कोई पैदल चलने लगे । सबको घर की ओर ही प्रयाण करना था । काव्या और मीना भी बात करती हुई कक्षा से बाहर निकली ।

''सुना है आजकल पाठशाला के बाहर, सोसायटी के बाहर छोटे बच्चों को उठाकर ले जाने वाली गैंग घूम रही है !'' काव्या बोली ।

''हाँ, मैंने भी सुना है । हमें सावधानी बरतनी होगी । आज हमारी रीना टीचर ने इसके बारे में कितना अच्छे से समझाया था ।'' मीना ने कहा ।

''आजकल समाचार पत्र में इस बात का कई बार जिक्र किया जाता है । मैंने अपनी सहेलियों, भाई-बहन, सबको सावधान किया है ।'' काव्या ने कहा।

दोनों सहेलियाँ चलती रही । थोड़ी देर बाद दोनों अपने-अपने घर के लिए अलग रास्ते पर मुड़ गई ।

मीना अपने घर की ओर जा रही थी, तब अचानक एक बाइक वाला उसके सामने आ गया और बोला, ''धूप बहुत है, तु मेरी बाइक पर बैठ जा । मैं तुम्हें तुम्हारे घर के पास छोड़ दूंगा । मैं भी उसी ओर जा रहा हूँ ।''

मीना बिना जवाब दिए चलती रही । ''अरे बेटा, इतनी धूप में मुझे तुम पर तरस आई, इसलिए कहता हूँ...।''

''मुझे नहीं बैठना है, चले जाओ अपने रास्ते...।'' मीना बोली ।

फिर भी बाइक वाला मीना का पीछा करता रहा ।

तेज धूप के कारण रास्ते पर चहल-पहल कम थी । बाइक वाला मीना के पीछे चलता रहा और बोला, ''तु थक जाएगी... तुझे भूख भी लगी होगी, ले यह कैडबरी खा ले...।''

मीना ने तेजी से अपने कदम बढ़ाए । अब उसका घर पास आ गया ।

उसमें हिम्मत आ गई । मीना ने पानी की स्टील की बोतल हाथ में कसकर पकड़ी और जोर से बाइक वाले के मुंह पर, सिर पर पटकना शुरू कर दिया धड़... धड़... धड़....। बाइक वाले को ऐसे हमले की उम्मीद ही नहीं थी । उसके सिर पर चोट लगी । सर चकराने लगा और वह गिर गया । मीना ने चिल्लाना शुरू किया । लोग इकट्ठे हो गए । तब मीना ने सबको हकीकत बताई। बाइक वाले ने भागने की कोशिश की, पर लोगों ने उसे दबोच लिया । लोगों ने पुलिस को जानकारी दी । पुलिस थोड़े ही समय में आ पहुंची ।

''हमें इसकी ही तलाश थी । यह व्यक्ति बच्चे उठाने वाली गैंग का सदस्य है ।'' पुलिस ने बताया । पुलिस बाइक वाले को लेकर चली गई और मीना अपने घर गई ।

सावधान... बच्चों को और बच्चों के माता-पिता सबको सावधान होने का वक्त आ गया है । बाहर जाने वाले खुद के बच्चों को अनजान व्यक्ति के प्रलोभन से कैसे दूर रहकर सावधानी बरतनी होगी यह समझाना है । बच्चों को मुसीबत के समय में हिम्मत हारे बिना उसका सामना कैसे करना है यह भी सीखना होगा । ■

जीवन का पतन

बिना विवेक के जीवन का पतन भी मात्र समय का प्रश्न है ।
संपत्ति की आसक्ति का मिटना क्रान्ति है ।
पैसे व्यर्थ न गँवाने की चिन्ता तो सब करते हैं ।
समय व्यर्थ न गँवाने की चिन्ता किसे है?
जहाँ अच्छा मिले, वह सद्गति । जो अच्छा बनाये, वह सद्बुद्धि ।
जहाँ खराब मिले, वह दुर्गति । जो खराब बनाये, वह दुर्बुद्धि है ।
अपकीर्ति से डरने में ज्यादा बुद्धि की जरुरत नहीं ।

हास्य का हसगुल्ला

प्रस्तुति : हेमु मोदी *(सुरत)*

❒ जेलर (कैदी से)- क्या बात है, सुखीराम तुम्हे कभी कोई भी जेल में मिलने नही आता है?
कैदी - सब है, भाई-बाप और यार-दोस्त।
जेलर - पर तुमसे मिलने क्यों नहीं आते?
कैदी - साहब वो सब भी इसी जेल में सजा काट रहे हैं।

❒ पुत्र - मां मै भी तालाब में तैरना चाहता हुं ?
मां - नहीं ! बेटा डूब जाओगे।
पुत्र - लेकिन पिताजी तो घंटे-भर से तालाब मे तैर रहें है।
मां - बेटा तुम्हारे पापा का बीमा हो चुका है।

❒ अध्यापक ने एक बच्चे से पूछा - हजार के बाद लाख, फिर करोड, फिर अरब आता है, अरब के बाद क्या आता है?
छात्र ने कहा - सर! अरब के बाद ईरान आता है।

❒ एल.के.जी. के बच्चे को इम्तहान में जीरो मिला।
पिता - (गुस्से से) यह क्या है ?
बच्चा - पापा, मैम के पास स्टार खत्म हो गए तो उन्होंने मुझे मून दे दिया।

❒ बेटा - पापा, १० रुपये देना गरीब को देना है !
पापा - कहां है गरीब ?
बेटा - बेचारा बाहर धूप में आइसक्रीम बेच रहा है !

❒ मरीज (डॉक्टर से) - मैं रोज ५० रुपये की दवाई ले रहा हूँ, पर कोई फायदा नहीं हो रहा !
डॉक्टर - अब तुम मुझसे ४० रुपये वाली दवाई ले जाओ। इससे तुम्हे रोज १० रुपये का फायदा होगा !!!

❒ अध्यापक ने सुरेश से कहा - सुरेश ! तुम कक्षा में सबसे पीछे हो?
सुरेश ने कहा - नहीं मास्टरजी! मेरे पीछे दीवार भी है।

■

प्रकाशन कॉ-ऑर्डिनेटर : समीर पारेख, *क्रिएटिव पेज सेटर्स,* घाटकोपर

तस्वीर बोल रही हैं अनुकंपादान की

एक उदार दानदाता के सहयोग से, जीवन ज्योत संस्था के संस्थापक एवं मैनेजिंग ट्रस्टी, श्री हरखचंदभाई सावला (बाडावाला), एक कैंसरग्रस्त महिला मरीज को उसके जन्मदिन के अवसर पर एक नई साड़ी प्रदान कर रहे हैं।

हड्डी के कैंसर से पीड़ित एक बुजुर्ग मरीज को कमर पटा देते हुए जीवन ज्योत संस्था के कार्यकर्ता ।

RNI. MAHHIN/2012/45662 Post Reg. MCE/141/2024-26.
Licence to Post Without Prepayment No. MR/TECH/WPP-208/EAST/2024-26.
Posted at Mumbai Patrika Channel Sorting Office, Mumbai- 400 001
Published and Posting on 15th of every month.

To,

कौन बनेगा करोड़पति फेम

तस्वीर बोल रही हैं जलाराम अन्नदान क्षेत्र की

'जीवन ज्योत जलाराम अन्नदानक्षेत्र' के अंतर्गत 'गणेश चतुर्थी', 'संवत्सरी' और 'दाता के जन्मदिन' के त्रिवेणी संगम पर दूर-दराज के गांवों से आने वाले मरीजों और बारदासी को बासुंदी के साथ प्रेमपूर्वक स्वादिष्ट भोजन परोसते हुए जीवन ज्योत संस्था के कार्यकर्ता।

Printed, Published, Edited & Owned by - **Mr. H. K. Savla,** Published from **Jeevan Jyot Cancer Relief & Care Trust,** 3/9, Kondaji Chawl, Jerbai Wadia Road, Near Tata Hospital, Parel, Mumbai - 400 012. & Printed at **P. H. Printer,** 18-P, D. L. Jain Compound, Opp. Voltas Ltd., 64, Dr. B. A. Road, Chinchpokli (E), Mumbai 400 012 ***Editor*** : **H. K. Savla**